SHAKUNTALAM INSTITUTE OF TEACHERS EDUCATION

KIRHINDIH, KUMHAU STATION ROAD, SHIVSAGAR

COURSE NAME – B.Ed. **SESSION** – 2020 - 22

SUBJECT - Learning and Teaching (C-3)

TOPIC NAME – Unit--4 (Seating Arrangements)

DATE - 08 07/2021

MAY
WEDNESDAY
15
WK 20 • 135-230

MAY 2019

M	T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F	S	S
			1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31									

कक्षा-कक्ष की बैठक व्यवस्था

विद्यालय में बच्चों की बैठने की व्यवस्था का बालक के शारीरिक मानसिक एवं नैतिक विकास पर गहरा प्रभाव पड़ता है। यदि विद्यालय के फर्नीचर का आकार, प्रकार अनुपयुक्त है तो पाचन तंत्र, नेत्रदोष, कंधो की गोलाई, रीढ़ का झुकाव आदि दोषों के कारण बालक को शारीरिक क्षति उठानी पड़ेगी। साथ ही बुरे अनुशासन, चिड़चिड़ाहट, बेचैनी आदि के कारण नैतिक क्षति होगी। इसके अतिरिक्त एकाग्रचित्त एवं ध्यान के अभाव में मानसिक क्षति उठानी पड़ेगी।

कक्षा-कक्ष में फर्नीचर
(Furniture in Classroom)

विद्यालय के फर्नीचर में सबसे महत्वपूर्ण वस्तु डेस्क, कुर्सी तथा श्यामपट्ट को माना जाता है। हमारे विद्यालयों में प्रायः एकही आकार-प्रकार की मेज-कुर्सियां देखने को मिलती हैं जबकि उन्हें प्रयोग करने वाले बालक समान ऊँचाई के नहीं होते हैं। जिस प्रकार की अभिवृद्धि के लिए शारीरिक गठन एवं आकार के अनुकूल वस्त्रों की आवश्यकता होती है उसी प्रकार प्रत्येक बालक की सामान्य अभिवृद्धि एवं स्वस्थ जीवन के लिए, विद्यालय में उसकी ऊँचाई के अनुकूल ही डेस्क एवं कुर्सी की व्यवस्था होनी चाहिए।

कुर्सी एवं डेस्क के आकार एवं प्रकार को निर्धारित करने वाली परिस्थितियाँ

2019

कुर्सी – उपयुक्त कुर्सी में निम्नलिखित बातें होनी चाहिए –

1. कुर्सी की ऊँचाई इतनी होनी चाहिए कि छात्र उसपर बैठकर अपने पैर फर्श पर समतल रख सके तथा उसकी टाँगे एवं जाँघें (टाँगों) के साथ 90° का कोण बनाती हुई क्षैतिज हों।

2. कुर्सी की सीट इतनी चौड़ी होनी चाहिए कि छात्र की जाँघों की लम्बाई का 2/3 भाग कुर्सी की सीट या तख्ते पर टिका रह सके।

3. कुर्सी का अगला किनारा गोलाईयुक्त होना चाहिए जिससे जाँघों की रक्त-वाहिनियों एवं स्नायुओं पर ज़ोर या दबाव न पड़ सके।

4. कुर्सी की पीठ ऐसे ढंग से बनी हो, जिससे कमर को सहारा मिल सके।

5. कुर्सी की सीट की गहराई 3/8" होनी चाहिए।
[redacted]

डेस्क – उपयुक्त डेस्क में निम्नलिखित बातें होनी चाहिए –

1. डेस्क ऊँचाई इतनी होनी चाहिए जिससे कुर्सी पर बैठकर छात्र उस पर लिखते समय न तो अपने कन्धों को उचकाये और न आगे की ओर झुकाये।

2. डेस्क का कुर्सी की ओर वाला किनारा छात्र की नाभि तक आना चाहिए।

3. डेस्क की चौड़ाई लगभग 18 इंच होनी चाहिए। इसकी

आवश्यकता अनुसार घटाया या बढ़ाया जा सकता है।

4. डेस्क की उपरी सतह का ढ़ाल आगे की ओर 15° पर होना चाहिए।

5. डेस्क की उपरी सतह की लम्बाई इतनी होनी चाहिए कि छात्र अपने हाथों को उस पर सरलता से रख सके तथा कुहनियों को 3 या 4 इंच तक बाहर की ओर हटाने में समर्थ हो सके।

सीट और डेस्क की सापेक्षिक स्थिति :-
कुर्सी व डेस्क को निम्नलिखित प्रकार से व्यवस्थित किया जा सकता है-

1. धनात्मक स्थिति :- यदि डेस्क के कुर्सी की ओर वाले किनारे से डाले गये लम्ब और कुर्सी के किनारे के बीच में स्थान रहता है तो इस व्यवस्था को धनात्मक स्थिति कहते है। कुर्सी और डेस्क की यह स्थिति उस समय उपयोगी सिद्ध होती है जब बालक को शिक्षक के प्रश्नों का उत्तर देने या किसी अन्य कारण से उठना पड़ता है या ऊपर चलना पड़ता है।

2. शून्यात्मक स्थिति :- यदि डेस्क के कुर्सी की ओर वाले किनारे से डाला गया लम्ब कुर्सी के किनारे को मात्र स्पर्श करता है तो यह स्थिति शून्यात्मक स्थिति कहलाती है। इस अवस्था में बालक बैठने के लिए समुचित आसन को सरलता से नहीं निभा सकता है।

3. ऋणात्मक स्थिति :- इसमें कुर्सी डेस्क के नीचे घुसी हुई होती है। यह स्थिति लेखन कार्य के लिए सबसे उपयुक्त है परन्तु इस स्थिति का सर्वोत्तम लाभ तभी प्राप्त हो सकता है जब कुर्सी एवं डेस्क छात्र के ऊँचाई के अनुकूल हों।

JUNE 2019
M T W T F S S M T W T F S S
1 2 3 4 5 6 7 8 9
10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23
24 25 26 27 28 29 30

18 MAY SATURDAY
138-227 • WK 20

कक्षा - कक्ष में सीटों की व्यवस्था :-

(अ) क्षैतिज रूप में :- इस ढंग से व्यवस्थित करने के लिए डेस्कों को सीधी रेखा में क्षैतिज रूप में रखते चले जाते हैं। इन डेस्कों के बीच खाली स्थान नहीं रखा जाता है। इसमें स्थान दो क्षैतिज पंक्तियों के बीच में रखा जाता है। इस ढंग से अधिक छात्रों के लिए सीटों की व्यवस्था की जा सकती है।

(ब) शीर्षात्मक रूप में :- (लम्बवत रूप में) :- इसमें डेस्क एवं कुर्सियाँ शीर्षात्मक रूप से व्यवस्थित की जाती हैं। इसमें शिक्षक की मेज के पास से लेकर पीछे तक एक के बाद दूसरी डेस्क एवं कुर्सी रखते चले जाते हैं। कक्षा-कक्ष के आकार के अनुसार 4 या 6 शीर्षात्मक पंक्तियाँ बन जाती हैं। इन पंक्तियों के बीच खाली स्थान रखा जाता है। इस व्यवस्था में छात्र सरलता से घूम-फिर सकते हैं।

(स) अर्द्ध - गोलाकार ढंग :-

इसमें अधिक स्थान की आवश्यकता होती है। इस कारण यह व्यवस्था मितव्ययी नहीं है। यह व्यवस्था खुली हवा-प्रणाली (Open-Air System) के लिए उपयुक्त है। कक्षा - कक्ष में डेस्क और कुर्सियों को इस ढंग से व्यवस्थित करने पर पर्याप्त स्थान अनुपयोगी रह जाता है, साथ ही कम छात्रों के लिए व्यवस्था हो पाती है।

JULY

AUGUST

श्यामपट्ट (Blackbord)

श्यामपट्ट शिक्षण का एक महत्वपूर्ण उपकरण है शिक्षक इसकी सहायता से अपने पाठ को रोचक एवं बोधनीय बनाने में सफल होता है। श्यामपट निम्न प्रकार के होते है

(अ) दीवार श्यामपट्ट :- यह दीवार का काले रंग से रंगा हुआ कुछ क्षेत्र होता है। पाश्चात्य देशों के विद्यालयों में इस क्षेत्र को हल्के पीले या हरे रंग से रंग दिया जाता है।

(ब) फ्रेमयुक्त दिवारपट्ट :- यह फ्रेम युक्त लकड़ी का पट्टा होता है जो दीवार में हुकों के सहारे लगा रहता है।

(स) स्लाइडिंग दीवार पट्ट :- यह दिवार-पट्ट घिरी पर टंगा रहता है। इसमें दो लकड़ी के तख्ते या पट्टा होते हैं जिनको आवश्यकता अनुसार ऊपर-नीचे किया जा सकता है।

(द) ईजिल श्यामपट्ट :- यह लकड़ी की तिपाई पर रखा लकड़ी का काला पट्ट है। इस श्यामपट्ट को तिकोनी तिपाई की सहायता से कहीं भी स्थापित किया जा सकता है।

6.

JUNE 2019

M	T	W	T	F	S	S
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

20 MAY MONDAY
140-225 • WK 21

8 कक्षा - कक्ष की अन्य उपयोगी सामग्री को सुरक्षित
रखने के लिए कक्षा-कक्ष में आलमारियों की भी व्यवस्था
9 की जानी चाहिए। इसके अतिरिक्त नक्शों के स्टैण्ड की
व्यवस्था भी किया जाना आवश्यक है।

10

11

12

1

2

3

4

5

6

JULY

AUGUST

2019